ॐ

श्रीवीतरागाय नमः ।

सनातनजैनधर्म

अथवा

जैनधर्मकी प्राचीनताके ज्वलन्त प्रमाण ।

मूल लेखक और प्रकाशक—

श्रीमान् चम्पतरायजी जैन बैरिष्टर-एट-ला,

हरदोई ।

प्रथमावृत्ति १००० | पौष, वीरनिर्वाण संवत् २४५० जनवरी १९२४ ई० | न्योछावर